

(Allah.) No. 68. वेदहमे विपश्ये विभजिष्यति BHAG. P. 2, 7, 36. HARIV. 9764. अक्षरात्रे विभजते सूर्यः M. 1, 65. विभज्य कर्माणि PRAB. 109, 13. SUGR. 1, 23, 19. योगो विभज्यते Schol. zu P. 4, 3, 46. SIDDH. K. zu 2, 3, 71. 3, 2, 4. KAMJ. zu 8, 2, 86. कश्चिदर्थं च धर्मं च कामं च — विभज्य काले कालज्ञं समं वार्द सेवसे MBH. 2, 154. विभज्यसाधसाधुनि Spr. 3493. गणुदोषानशास्त्रज्ञः कथं विभजते जनः 4013. theilen so v. a. öffnen: समुद्रकानि KATHAS. 38, 51. dividiren SÜRJAS. 1, 65. 2, 31. 3, 22. 7, 4. 9, 16. VARAH. BRH. S. 8, 21. WEBER, GJOT. 72. 83. ज्ञेयराशिगतान्व्यस्तान्विभजेज्ञानराशिना 109. partic. विभक्तं vertheilt MBH. 4, 1327. AV. 1, 30, 4. समं KATJ. ÇR. 16, 8. 21. 23, 1, 10. तवेमे पञ्च पशवो विभक्ताः AV. 11, 2, 9. वृष्टिः स्तोकाशो विभक्ता AIT. BR. 2, 12. Spr. 2790. स्त्रीभूतलक्ष्मिरेनः — विभक्तम् vertheilt unter BHAG. P. 6, 13, 5. अस्मिन् (पितरि) स्थितिमति च विभक्ता त्वपि (लक्ष्मीः) VIKR. 160. विभक्ते nach erfolgter Vertheilung JAGN. 2, 126. abgetheilt so v. a. der seinen Theil erhalten hat: विभक्ताः सह जीवतो विभजेरन्युनर्पदि M. 9, 210. धातृणामविभक्तानाम् 215. BHAG. P. 9, 21, 7 an der ersten Stelle (nach dem Schol. der eine Theilung veranstaltet hat). zertheilt, getheilt, geschieden: विभक्तं क्रकचेनेव गिरिः प्रङ्गं द्विधाकृतम् HARIV. 6910. रोमराज्या (so ist zu schreiben) विभक्तं च द्विधेव तव — विशालं जघनम् R. 3, 32, 32. रेखा° KUMARAS. 7, 18. विभक्तात्मन् RAGH. 10, 66. Verz. d. Oxf. H. 238, 6, 17. KATHAS. 43, 342. अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव स्थितम् BHAG. 13, 16. RAGA-TAR. 5, 109. आ मलयदिभक्तं मत्सेतुना केनिलम्बुराशिम् RAGH. 13, 2. अष्टभिर्मर्यादागिरिभिः सुविभक्तानि (नव वर्षाणि) भवन्ति BHAG. P. 5, 16, 6. सप्तकल्या° KATHAS. 38, 27. RAGH. 3, 21. सप्तपष्टिस्तथा लताः सार्धाः स्वेदायनैः सह । वायवोपैर्विगण्यते विभक्ताः परमाणवः || getrennt von den luftigen (Atomen) d. i. ohne die I. A. JAGN. 3, 103. fg. Trennung, Absonderung (= विभाग Schol.) P. 2, 3, 42. getheilt, dividirt SÜRJAS. 2, 15. abgeschieden so v. a. vereinsamt: अतःपुर (विगतसंस्कारम् भक्तं सेवितं संस्कृतम् तद्विभक्तम् Schol.) R. 2, 114. 17. subst. Abgeschiedenheit, Einsamkeit: परिचित° adj. (मनस्) ÇAK. 107. gesondert, unterschieden, besonders, verschieden, mannichfaltig: यस्याविभक्तं (= साधारणं Schol.) वसु सकृद्वैः nicht gesondert, gemeinschaftlich MBH. 12, 259. R. 4, 7, 7. अस्त्रं प्रयोगसंस्कारविभक्तमस्त्रम् RAGH. 3, 57. नानावर्णविभक्तानाम् (गवाम्) R. 1, 33, 20 (34, 22 GORR.). विभक्तेरधिकारिभिः RAGA-TAR. 3, 163. KAM. NITIS. 16, 4. वलाकृक्चैद्विभक्तरागामकालसंध्याम् KUMARAS. 1, 4. abgetheilt, regelmässig, symmetrisch: नगरं विभक्तिपुक्तमापणैः RAGA-TAR. 3, 358. °प्रपथा adj. BHAG. P. 8, 13, 15. समं (अङ्ग) R. 1, 1, 13. सु° (अङ्ग) MBH. 1, 6524. VJUTP. 11. सुविभक्तान्तरद्वारा, सुविभक्तमरूपया R. 1, 3, 8. 10. सुविभक्तानि द्वारानि MBH. 13, 186. verziert, geschmückt (vgl. भक्ति): °गात्र (= चन्दनायनलतावपच Schol.) HARIV. 8437. KUMARAS. 7, 18. अङ्गं गेरेचनापत्रविभक्तम् 15. सुविभक्तवज्रं adj. HARIV. 9288. विभक्त unter den Beinamen des Kārttikeja MBH. 3, 14633. — 2) verehren: स्वाहोच्चारणतो देवान्स्वधोच्चारणतः पितृन् । विभज्यत्वदानेन भूताद्यानतिथीनपि || MÄRK. P. 93, 5. — caus. zur Vertheilung bringen: विभाज्यमान AV. 12, 3, 28. 11, 1, 13. theilen, eintheilen: नवधा — विभाजिता देशाः VARAH. BRH. S. 14, 1. श्रुतिभागविभाजिता (वीणा) KATHAS. 9, 81. dividiren SÜRJAS. 1, 19. 53. 60, 2, 39. 41. 46. VARAH. BRH. S. 8, 20. — Vgl. विभक्तर, विभज, विभजनीय. विभज्य, विभाग. विभाज्य.

— अभिवि med. vertheilen SUGR. 1, 327, 14 (विभजति v. l. der Berl. Hdschr.).

— प्रवि theilen, scheiden, sondern: पञ्चधात्मानं प्रविभजति PRAGNAP. 2, 3. तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा BHAG. 11, 13. MBH. 1, 7160. 3, 16140. वलं च प्रविभज्य R. 6, 16, 2. MBH. 8, 2128. 12, 11290 (wo die ed. Bomb. प्रविभजति st. प्रतिभ° liest). सुरनरतिर्यगादिप्रविभक्तं जगत् KULL. zu M. 1, 21 (S. 23, Z. 1). Kār. 3 aus der Kāç. zu P. 7, 2, 10. ब्राह्मणतत्रविशो प्रूक्षाणां च — कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभविर्गुणैः BHAG. 18, 41. नामरूपप्रविभक्तविशेष ÇAK. zu BRH. ÅR. UP. S. 26. 172. 271. पूर्व पूर्वपरपरं प्रविभज्य निर्व्यात् NIR. 2, 2. SUGR. 1, 144, 5. vertheilen: ऋणे धने च सर्वस्मिन्प्रविभक्तं M. 9, 218. प्रविभक्तराशि ÇAK. 163. प्रविभक्तादका (गङ्गा) समम् MÄRK. P. 36, 4. बान्धवैः प्रविभक्तेः die unter einander getheilt haben M. 8, 166. मानुषेकेकपादेन वस वं (स्वर) प्रविभज्य वै dich theilend HARIV. 10536. प्रविभक्तमकारुष्या adj. vertheilt so v. a. an verschiedenen Orten stehend R. GORR. 1, 3, 11. — Vgl. प्रविभाग.

— प्रतिवि auf den Einzelnen vertheilen: पट्टतिषाः प्रतिविभज्य ददाति KATJ. ÇR. 4, 10, 12. 13, 4, 15. — Vgl. प्रतिविभाग.

— संवि 1) theil n, sondern SUGR. 1, 6, 2. 106, 13 (act.). mit (सह) Jmd Etwas theilen, Jmd (dat. gen.) einen Theil abgeben: संविस्तेन संविभज्य — तं भनितवान् PANKAT. 217, 12. यास्त्वक् वा असंविभज्याम्राति BHAG. P. 5, 26, 18. आद्याघातेवासिभ्यः कामान्संविभजेयथा 7, 14, 11. वित्तं यदा यस्य च संविभक्तम् Spr. 2790, v. 1. एकः संपन्नम्राति वस्ते वासस्य शासनम् । यो ऽसंविभज्य भूतेभ्यः 337. 4717. दैन्यभावाच्च भूतानो संविभज्य सदा MBH. 14, 1292. तस्मै संव्यभजत्सो ऽन्नम् BHAG. P. 9, 21, 6. 7, 13, 6. — 2) Jmd (acc.) mit Etwas (instr.) versehen, bedenken, beschenken: ये तु रन्तिमुमिच्छन्ति देवाः, बुद्ध्या संविभजति तम् Spr. 4304. को ऽस्मान्संविभजिष्यति MBH. 9, 2912. (प्रजाः) शुभैः संविभज्यकामैः 13, 5780. KATHAS. 23, 290. 38, 130. इन्द्रमण्डलम् । स्वतेजसा संविभजन् (सूर्यः) RAGA-TAR. 6, 62. (ताम्) यतोभिरन्नपनैश्च संविभज्य MBH. 1, 3399. 3, 12683 (wo mit der ed. Bomb. संविभज्य zu lesen ist). KATHAS. 23, 17. 38, 90. R. GORR. 2, 32, 11. 15. संविभक्तुम् 39. त्वा नितिकनकवस्त्रवाहनभवनधनेः संविभजे सः KATHAS. 8, 36. 29, 54. 32, 190. 36, 62. 43, 240. 43, 11. RAGA-TAR. 1, 243. 3, 113. 6, 119. विविधाः नित्यीः । संविभजे विभक्तेन नाद्येन स वारिणा || 3, 109. मया यथोचिताज्ञाव्यैः संविभक्ताश्च वृत्तिभिः MBH. 3, 8452. 13, 1805. R. GORR. 2, 9, 9. HARIV. 10301. KAM. NITIS. 7, 31. ÇAK. 103, v. 1. KATHAS. 43, 11. — caus. संविभाज्य MBH. 3, 12683 fehlerhaft für संविभज्य. — Vgl. संविभाग. संविभागिन्.

— सम् 1) theilen, dividiren: संभक्त SÜRJAS. 4, 19. — 2) Jmd sich theiligen lassen an: यथार्हं भित्तुकान्तियौश्च संभजेरन् PÄR. GRUH. 2, 10. पञ्च भूतं संभजते (अन्नादिना सेवते Schol.) MBH. 12, 3415. संभक्त Theil habend an. begabt mit (gen.): मयोः संभक्ताः वीरुधः AV. 8, 7, 12. — 3) vertheilen, verschenken: सम्भालीन् zur Erkl. von सनन् SÄ. zu RV. 1, 100, 18. — 4) संभक्त (संसक्त die neuere Ausg.) = भक्त ergeben, trennend abhängig HARIV. 7391. — Statt संभजे MBH. 7, 2844 liest die ed. Bomb. richtiger खं भजे. — caus. संभाज्यमान MBH. 14, 2673 fehlerhaft für सम्भा°, wie die ed. Bomb. liest.

भञ्जक (von भञ्ज° nom. ag. Austheiler, Vertheiler: s. चोत्र°.

भञ्जग Verz. d. Oxf. H. 339, b. 17.

भजन von भञ्ज n. das Verehren, Verehrung. Cult VJUT. 33. 37. ÇAND.